पाठ-2

पाषाण काल (आखेटक, संग्राहक एवं उत्पादक मानव)

घर हमें जाड़े से, गर्मी से, तथा बारिश से सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें रहकर हम अपने सभी कार्यों को भली-भाँति कर लेते हैं किन्तु एक समय ऐसा भी था जब मनुष्य के पास घर नहीं थे। वे जंगलों में रहते थे। जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा तथा उनका शिकार करने के लिये उनके पास केवल पत्थर के ही औजार थे।

मानव में परिवर्तन

मानव शास्त्रियों के अनुसार आज से लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व मानव विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस समय उसमें कुछ महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन आए। जैसे-

- खड़े होकर सीधे चलना।
- अँगूठे के कारण वस्तुओं को पकड़ने की क्षमता का पैदा होना जिससे महत्वपूर्ण कार्यों को कर लेना।
- मस्तिष्क के आकार एवं क्षमता में विस्तार।

मानव के विकास, विभेद आदि की जानकारी देने वाले मानव-शास्त्री कहलाते हैं।

मानव के शारीरिक विकास की यह प्रक्रिया चलती रही तथा उसमें धीरे-धीरे विकास होता गया जैसा कि नीचे के चित्र से स्पष्ट होता है-

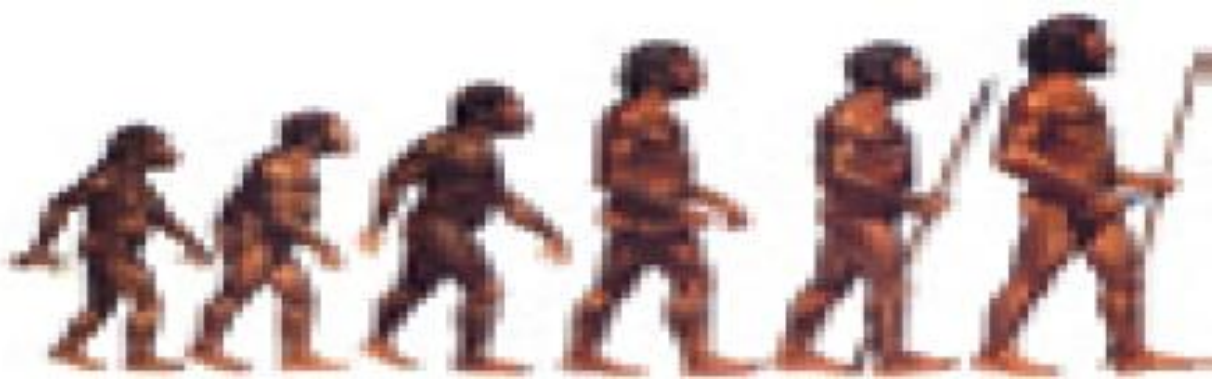

मानव का विकास क्रम

इन महत्वपूर्ण बदलावों के कारण मानव अपने आस-पास के वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करने लगा। अब उसने हाथ एवं मस्तिष्क का अधिक प्रयोग करना सीख लिया था और वह अपनी जरूरतों के लिए पत्थर के औजारों या उपकरणों का निर्माण करने लगा। इन्हीं पत्थर के उपकरणों से हमें उसके होने का पता चलता है।

पाषाण काल

पाषाण अर्थात् पत्थर, काल अर्थात् समय। मानव ने अपनी रक्षा और अपनी भूख मिटाने के लिए सर्वप्रथम पत्थर के औजरों का ही सबसे अधिक उपयोग किया इसलिए इस युग को पाषाण काल कहते हैं। पत्थर से बने औजारों में समय-समय पर परिवर्तन हुए हैं। इसलिए पाषाण युग को तीन भागों में बाँटा गया है।

1. पुरापाषाण काल2. मध्य पाषाण काल3. नव पाषाण काल

पुरापाषाण काल

पुरापाषाण काल में मानव पहले खुले आकाश के नीचे, नदियों के किनारे या झील के पास रहता था। इससे उसे शिकार करने में आसानी होती थी। वह पत्थर के औजारों से पशुओं का शिकार करता था। शिकार से प्राप्त माँस ही उसका मुख्य भोजन था। कन्दमूल तथा फल भी उसके भोजन में सम्मिलित थे। थोड़े समय बाद मानव ने गुफाओं में रहना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि उसे तब तक घर बनाना नहीं आता था। शिकार की खोज में वह लगातार घूमता रहता था। इस प्रकार उसका कोई स्थायी आवास नहीं था। इसी समय उसने आग के प्रयोग की जानकारी प्राप्त की। साथ ही उसने अपने मृतकों को कब्र में दफनाना प्रारम्भ कर दिया। पुरापाषाण काल के आखिरी दौर में उसने चित्र बनाना भी सीख लिया। उस समय की गुफाओं में उसके द्वारा बनाए गए चित्र मिलते हैं। इन चित्रों में शिकार के दृश्य बनाए गए हैं। इसी समय मानव ने हड्डी के औजार भी बनाना प्रारम्भ किया। यह औजार उसके ज्ञान में वृद्धि विकास को दर्शाते हैं।

इस युग में मानव झुण्ड बनाकर ही शिकार करता था। जिसे वह आपस में बाँटकर खाते था। मानव यह समझ चुका था कि वह तभी जीवित रह सकता है जब वह दूसरों के साथ मिलकर चले। इस प्रकार एक दूसरे का सहयोग करने की भावना इस युग में विकसित हो चुकी थी।

कैसे करते थे शिकार ?

आदि मानव के पास न ही जंगल के जानवरों जैसे पैने नाखून थे, न ही नुकीले दाँत, न जबड़े और न ही सींग। उसकी बड़ी समस्या अपने से ज्यादा ताकतवर जंगली जानवरों से रक्षा करने व उनका शिकार करने की थी। इसके लिए उसने पत्थर के औजारों का निर्माण व प्रयोग किया, क्योंकि उस युग में पत्थर आसानी से प्राप्त हो जाता था।

इस युग के पत्थर के औजार आकृति में सुडौल नहीं थे। ये बेडौल एवं भौड़ी आकृति वाले थे।

आग का पता कैसे चला ?

औजार बनाने के लिए वे एक पत्थर पर दूसरे पत्थर से चोट मारते थे। एक पत्थर से दूसरा पत्थर टकराने पर चिनगारी निकली। निकलने वाली चिनगारी से उन्हें आग का ज्ञान हुआ। इससे वह सूखी पत्तियों, लकड़ी की टहनियों आदि को जलाने लगे।

पुरापाषाण कालीन पत्थर के औजार

सोचिए और लिखिए कि आग का ज्ञान होने के बाद उनके जीवन में क्या परिवर्तन आया होगा ?

आग की खोज इस युग की महान उपलब्धि थी।

मध्य पाषाण काल

मध्य पाषाण काल के औजार (उपकरण) पुरा पाषाण काल की अपेक्षा आकार में छोटे हो गए। इस समय प्रकृति में अनेक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ा। नई परिस्थिति से तालमेल बैठाने में ही उसने उपकरण छोटे बनाना प्रारम्भ किया। जलवायु पहले की अपेक्षा गर्म हुई फलस्वरूप जहाँ-जहाँ बर्फ जमी थी वह पिघल गई। पृथ्वी की उर्वरक शक्ति का विकास हुआ तथा घास एवं वनस्पतियों के मैदान विकसित हुए। घास को खाने वाले छोटे जानवर जैसे हिरण, खरगोश, भेड़, बकरी आदि पैदा हुए। मानव अपने आप उगी घासों को एकत्र करने लगा। इन घासों में कई आज के अनाजों की पूर्वज थीं। इनका प्रयोग मानव ने अपने भोजन में किया। इस प्रकार वह अब 'संग्राहक' बन गया। मानव ने इसी समय कुत्ते को पालतू बनाया। कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु है।

कैसे हुआ खेती का ज्ञान ?

विद्वानों का मत है कि अपने आप उगे हुए अनाजों को मानव ने एकत्रित करना शुरू किया। अनाज के कुछ दाने गीली मिट्टी में अथवा इधर-उधर गिरे होंगे। इन स्थानों पर फिर से वही अनाज उगे। जब मानव ने इसे देखा तब उसे ज्ञात हुआ कि इन अनाज के दानों से बार-बार अनाज उगाया जा सकता है। अपने इस ज्ञान का उसने परीक्षण भी किया। तब जाकर उसे खेती का ज्ञान हुआ।

आप गेहूँ के कुछ दानों को गीली मिट्टी या गोबर के ढेर में डालिए कुछ दिन बाद देखिए क्या होता है?

पत्थर से पत्थर पर प्रहार करना

नव पाषाण काल

पुरातत्वविदों का यह मानना है कि मानव ने जब से भली-भाँति खेती करना प्रारम्भ कर दिया तभी से नवपाषाण काल प्रारम्भ होता है। खेती के कारण मानव अब भोजन संग्राहक से भोजन उत्पादक बन गया। इस समय उसके पत्थर के उपकरण अधिक उपयोगी एवं सुडौल थे क्योंकि उन्हें अधिक कुशलता से बनाया गया था। यह उपकरण घिसकर चमकदार बनाए गए थे। हत्थेदार कुल्हाड़ी एवं हँसिया इस समय के महत्वपूर्ण औजार थे। खेती के

साथ पशुपालन भी प्रारम्भ हुआ। पशुआंे का प्रयोग मांस व दूध प्राप्त करने में किया जाता था।

मानव अब अपने खेतों के आस-पास मिट्टी के घरों एवं घास-फूस के छप्पर वाले घरों में रहने लगा। धीरे-धीरे ये बस्तियाँ गाँव बन गए।

मध्यपाषाण कालीन औजार

कुल्हाड़ी एवं हँसिया से क्या-क्या किया जा सकता है सोचिए और लिखिए।

अब ये मिट्टी के बर्तन बनाना भी जान गए थे। पहिये का आविष्कार भी हुआ। इसका प्रयोग मिट्टी से बर्तन बनाने तथा सामान ढोने में किया जाने लगा। बर्तनों पर नक्काशी एवं चित्रकारी में रंगो का प्रयोग होने लगा। खेती के कारण लोग एक ही जगह रहने लगे। फलस्वरूप नये-नये कौशलों का विकास हुआ जैसे- मूँज की टोकरी व चटाइयाँ बनाना, कताई करना, जानवरों के बालों से कपड़ा बनाना आदि।

शवों को दफनाने के ढंग से इनके धार्मिक विश्वास के विषय में जानकारी मिलती है। शवों (मृत व्यक्तियों) के साथ खाने-पीने की चीजें, बर्तन, हथियार आदि भी दफनाए जाते थे। इन लोगों का विश्वास था कि मरने के बाद भी व्यक्ति इनका उपयोग करेगा।

धातुकाल

नवपाषाण युग का अन्त होते-होते पत्थर के साथ-साथ धातुओं का इस्तेमाल शुरू हो गया। धातुओं में सबसे पहले ताँबे का प्रयोग हुआ जिसके कारण इस युग को ताम्र-पाषाण युग कहा गया।

मानव ने ताँबे की खानों का पता लगाकर, उससे ताँबा खोदकर निकालना शुरू किया। उच्च तापमान में ताँबे को पिघलाना तथा साँचे की सहायता से धातु-द्रव को विविध रूप देना भी उन्होंने सीख लिया। यह मानव विकास की एक और महत्वपूर्ण खोज थी।

धीरे-धीरे मानव ने ताँबे व जस्ते को मिलाकर मिश्रित धातु काँसा बनाना सीख लिया।

नव पाषाण कालीन कृषि उपकरण नव पाषाण कालीन मिट्टी के बर्तन

नव पाषाण कालीन औजार

मानव जीवन उसकी प्रगति एवं संघर्ष की कहानी है। प्रारम्भिक मानव ने अपनी समस्याओं से जूझते हुये अपने को जीवित रखा, अपनी उन्नति की एवं अपने को सभ्य बनायाA

अभ्यास

1. रिक्त स्थान भरिए-

(क) आग की खोज..... युग में हुई।

(ख) पुरा पाषाण कालीन पत्थर के औजार..... वाले थे।

(ग) पहिए का आविष्कार..... काल में हुआ।

2. उत्तर लिखिए-

(क) पाषाण युग को किसकी विशेषताओं के आधार पर बाँटा गया है ?

(ख) मानव ने आग जलाना कैसे सीखा ?

(ग) पुरातत्वविद् नवपाषाण काल का प्रारम्भ कब से मानते है ?

(घ) पाषाण युगीन मानव अपने औजार किन-किन वस्तुओं से बनाते थे ?

(ड.) प्रारम्भिक मानव अपना भोजन किस प्रकार प्राप्त करते थे ?

(च) मध्यपाषाण काल में हुए प्राकृतिक परिवर्तन का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

3. सही कथन के आगे सही (झ्) का और गलत कथन के आगे गलत (´) का निशान लगाएँ-

(क) मानव ने अपनी जरूरतों के लिए पत्थर के औजारों का निर्माण नहीं किया। ( )

(ख) पाषाण युग को तीन भागों में बाँटा गया है। ( )

(ग) मध्यपाषाण कालीन पत्थर के औजार आकार में बड़े थे। ( )

(घ) कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु है। ( )

(ङ) हत्थेदार कुल्हाड़ी एवं हँसिया नव पाषाणकाल के महत्वपूर्ण औजार नहीं थे। ( )

(च) मानव ने ताँबे व जस्ते को मिलाकर मिश्रित धातु काँसा बनाना सीख लिया। ( )

4. मानव ने इधर-उधर घूमने के बजाय एक ही स्थान पर रहना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि-

(क) उन्हें एक ही स्थान पर जरूरत भर का पानी उपलब्ध था।

(ख) उनके पशुओं के लिये चारा पर्याप्त था।

(ग) उन्होंने खेती करना शुरू कर दिया था।

(घ) जंगली जानवर पर्याप्त मात्रा में मिलने लगे।

उपर्युक्त में जो सही हो उससे सम्बन्धित गोले को काला करिए।

प्रोजेक्ट वर्क -

घर बनाने में हम किस-किस सामग्री का प्रयोग करते हैं ? सूची बनाइए।
पाषाण कालीन मानव तथा वर्तमान मानव के रहन-सहन में क्या-क्या समानता है और क्या असमानता सूची बनाइए।